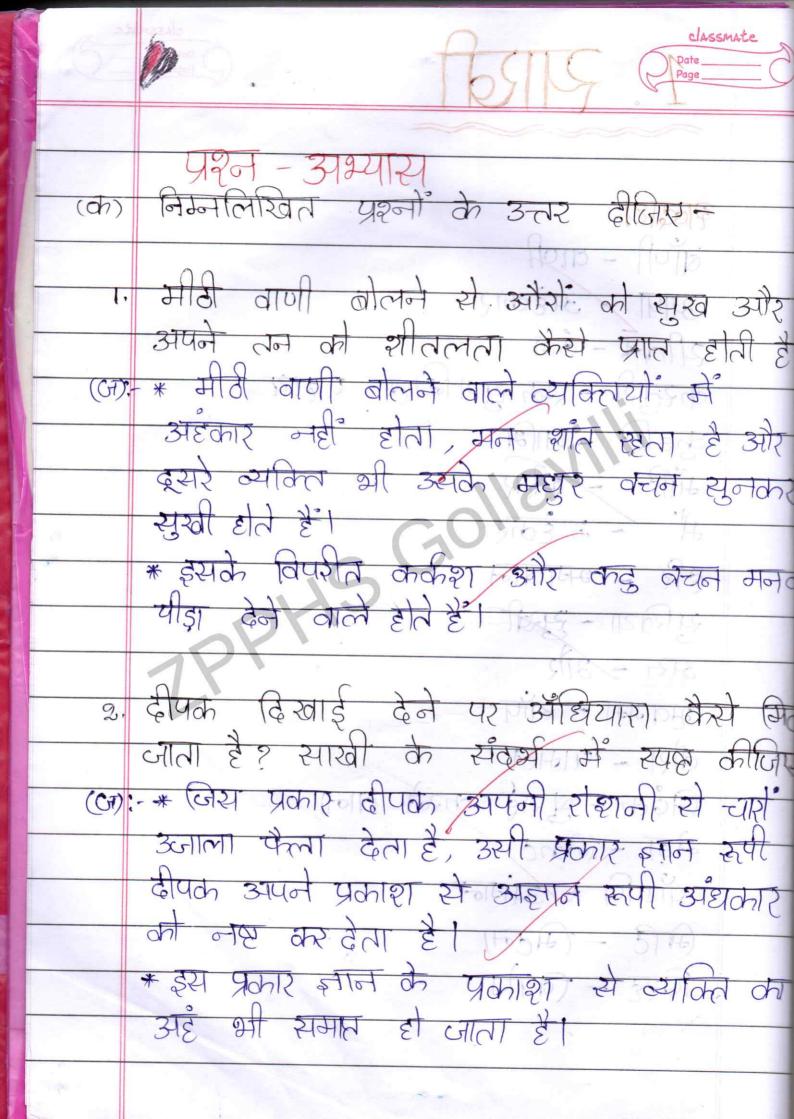
1. 218

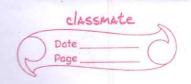
not.

Classmate

Date
Page

| | 31301-31301-3130 |
|---|--|
| | शब्दाया अन्य की विद्या निर्माणी (क) |
| | बॉणी - वाजी |
| | आण ने अंहें कार जिल्ला विकास |
| | सीतल - उंडा किका के कि |
| | करत्री - एक सुगन्धित पदाय |
| | |
| | कुडलि - नामि |
| | मांहि - भीशर |
| | H - 3 Ediz |
| 1 | हिरी - स्थान किल्लान शिक्ष |
| | सुखिया - सुबी डिलेड कार्जिक विकित |
| | 312 - 312 |
| | |
| | भूतगम - सांप |
| | वीरा - पामला के किए रहे कि |
| | निदंका ने शुराई करने वाना है |
| | 131 - (Anc) 2 105 mp 101120 |
| 0 | अगंगि अगंगन जिल्हा |
| | AC - (ACH) 13 116 96 810 100 |
| | (a) Call . 18 3 1 1 1 2 5 6 1 8 5 - 10 10 10 1 |
| K | विरह - (वयोग के स्वास्त्र प्राक्ष के |
| | |





इ. ईश्वर केण-कण में त्यात है, पर हम उसे क्यों नहीं देख पाते ? (क):- * जिय प्रकार हिरण की नामि में कस्त्री होने पर भी वह उसकी सुगंदा को पाने के लिए पूरे जंगल में भरकता किता है, ठीक उसी त्रेमांड हमाड़ शहीर में ईबर का वास होने पर भी हम उसे पाने के लिए पुरे संसार में archot Chrot & हर्ष ऐके उम्मिश्टर्भक का, महे स्म पंडित 4. संसार में सुखी व्यक्ति कोन है और द्वी कोन? यहाँ सीना अरे जागना किसके प्रतिक हैं? इसका प्रयोग यहाँ क्यों किया गया है? स्पष्ट की जिए । जार नार निव किंड किं (ज):- इस संसार में अज्ञानी और भोगी व्यक्ति सुखी हैं, जो हानी हैं वे दुनियां की स्थिति देखकर दुखी हैं स्थेन और जागना द्रान और अक्रान दोनें के प्रतीक हैं। कान अरि अप्नान के प्रयोग से कवि संसार में

मई चेतना लोगा यहता है।

308 do 19/16 19/16 - 10/13 13/10 Extens

इ. अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कवीर ने क्या उपाय सुझाया है ? (क):- , अपने स्वभाव को निर्माल रखने के लिए कवि ने निंद्रक को अपने पास रखने की सलाह ही है जयोंकी उसकी निंदा करने हो ही हमारे अंदर अहं का भाव नहीं आएगा अगेर मन निर्मल तथा पवित्र ही जाएगा 6. 'ऐके अविर पीत का, पढ़े सु पंडित होइ'-इस पिक्त दारा कवि क्या कहना चाहता है। जा इस पंक्ति के माध्यम से कवि ईश्वर प्रेम के बारे में बताला चाह्म है कि ईसर प्रेम ही हमें बान और मुक्ति मिल सकती है। 7. के बीर की उद्भा सारिवयों की भाषा की विशेषता स्पष्ट कीविए। (क) - केवीरदाय जी की भाषा की सबसे बड़ी विशेषता अभिव्यक्ति की की निर्भीकता है। अपनी शिक्षा के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा है कि - मिस कागढ़ छुप

कलम गही नहीं हाथ अधीत उन्होंने कभी भी कागज और कलम को हाथ तक नहीं लगाया । कंगीर की भाषा को सुद्युक्क ही माण या खिन्न ही भाषा की संज्ञा भी दी गई है। उनकी भाषा में एक ऐसा स्मेहिय है जो अन्य हो कहीं देखने को नहीं भिलता है। हद्य से निक्ती अभिन्यक्तियों के कारण उनकी भाषा सहन , सरम और मन पर सीधा पृहार करने वाली है।

ख) भाव स्पष्ट कीजिए। विरद्द भुवंगम तन बसे, मंत्र न लागे को हा।
(ज इस पंक्ति का भाव है कि जिस व्यक्ति के हत्य में ईश्वर के प्रति प्रेम रूपी विरद्द का सर्प बस जाता है, उस पर कोई मंत्र असर नहीं करता है। अथित भगवान के विरद्द में बोई भी जीव सामान्य नहीं रहता है। उस पर कोई शिता है। उस पर कोई शिता है। उस पर कोई शिता है। उस पर किसी बात का कोई असर नहीं होता है।

2. क्यारी कुंडलि बसे, मृग दूँवे बन माँहि।
(अ:- इस पिक्त में कबीर कहते हैं कि जिर प्रकार हिरण अपनी नाध्य से आती खुगंधा में मोहित रहता है परन्तु वह यह नहीं जानत कि यह सुगंधा उसकी नाभि में से आ रही वह उसे हथर - उधर दंदता रहता है। उसी प्रव अन्तानी भी वास्तविकता से अनजान रहता है। वस आनंदस्व स्प ईश्वर को प्राप्त करने के लिए विभिन्न धार्मिक अनुकानों में लिए रहता है। वह आना में विद्यमान हश्वर के यता को परचान नहीं पाता।

इ. जब में था तव हरि नहीं, अव हरि हैं में

(ज) - इस पंक्ति दवारा कबीर का कहना है कि जब तक मनुष्य में अज्ञान रूपी अंद्यकार छायां है वह ईश्वर के नहीं पा सकता। अयाति अंद्यार और ईश्वर का साथ - साथ रहना नामुमकिन है। जब ईश्वर की प्राप्ति ह जाती है तब अंद्यार दूर हो जाता है। 4. पीथी पढ़ि पढ़ि जम मुवा, पंडित भया न को हो ।
(ज) - कवीर के अनुसार बड़े ग्रंथ, शास्त्र पढ़ने ।
भर से कोई नहीं होता। अर्थात ईश्वर की प्राप्त नहीं कर पाता। प्रेम से इश्वर का समरण करने से ही उसे प्राप्त किया जा सकता है। प्रेम में बहुत शक्ति होती हो।

कवि परिचय

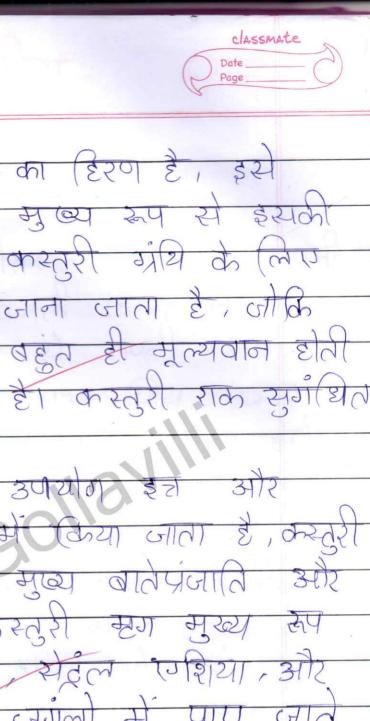
किवर - (1398-1518)

माना जाता है। गुरू रामामंद के शिष्य
कावीर ने 120 वर्ष की आयु पाई। जीवन के
अंतिम कुछ वर्ष मगहर में बिताए और
वहीं चिरनिद्रा में लीन हो गए।
कविर का उपाविभवि खेरी समय में हुआ
या जब राजनीतिक हार्मिक और सामाजिक
क्रांतियों अपने चरम पर भी।

21101 31EULU61 Ended .-

| 1 2/21 | पाठ में आए निम्नानिश्वत शब्दीं के प्रचलित ह |
|----------|--|
| grat | 910 01 0110 1010 1010 1010 1010 1010 10 |
| Hode | उदाहरण के अनुसार लिखिए |
| | उदाहरण - जिले - जीना |
| | |
| <u> </u> | अरिल :- जीना अरिकी |
| | मांहि - के अंदर (में) |
| 17 | |
| 15 | हेखाः देखाः । विकास |
| | |
| | भुवंगम - साप |
| | नेडा - निकट |
| | |
| _ | अगिण - अग्रीमन |
| | 21901 - 21901 - 21901 - 31010 |
| e/ | |
| 183 H | Hara - A Marker or reposition |
| | 100 X- 5-31619 15-16-13 11110 111016 |
| # _/ | V. |
| Feb Jap | जाली - जलीना |
| + | रास = उसका |
| J., | 340113 |
| | - 1716 1-18 - 1-01/20 - HE = 1/15 15/10 - 1/3 15 15 15 |
| 1000 | 1 Multi Ababa |
| 1 nog | 410401 196016, |
| (b) | HELE SILE LADGE LESS LEVELLE MARTER MARTINE |
| | |

करतुरी के विषय में जानकारी प्राप्त जी पिए करतुरी स्वा जिसे उपंग्रेजी में "Musk क कहा जाता है, राक- दुलींग उपोर विशेष प्रजि



पदार्य है, जियका उपयोग इन और पारंपरिक द्वाओं में किया जाता है, करतुरी म्हण के बारे में मुख्य बातेपंजाति और निवास स्थान: करतुरी म्हण मुख्य स्प से हिमालयी ब्रेजों सेंदल 'उशिया, और पूर्ती एशिया के जंगलों में पाए जाते हैं। भारत में यह अंतराक्ष हिमानल प्रदेश और अंरुणाचल प्रदेश की

. Lesson Ended.